

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
भारत मौसम विज्ञान विभाग
मौसम केंद्र, रायपुर



MINISTRY OF EARTH SCIENCES
INDIA METEOROLOGICAL DEPARTMENT
METEOROLOGICAL CENTRE RAIPUR

कृषि मौसम परामर्श बुलेटिन
राज्य: छत्तीसगढ़

Agro Meteorological Advisory Bulletin Chhattisgarh State

वैधता अवधि 08 अक्टूबर 2021 से 12 अक्टूबर 2021 तक
Validity For the period to 08th October 2021 to 12th October 2021

जारी करने का दिन
शुक्रवार, दिनांक 08 अक्टूबर 2021

Issued on
Friday, 8th October 2021

अगला नवीनीकरण : 12 अक्टूबर 2021
Next update : 12th October 2021

Issued by



भारत मौसम विज्ञान विभाग
मौसम केंद्र रायपुर
India Meteorological Department,
Meteorological Centre, Raipur,

सौजन्य से

In collaboration with



इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर
Indira Gandhi Krishi Vishwavidhyalaya, Raipur
तथा



कृषि विभाग छत्तीसगढ़ शासन
State Department of Agriculture

राज्य का कृषि जल वायु क्षेत्र Agro climatic Zone of State			
Sr.NO.	कृषि जल वायु क्षेत्र Agro climatic Zone	जिले Districts	कृषि मौसम क्षेत्र ईकाई Agro Met Field Unit (AMFU) location
1.	छत्तीसगढ़ का उत्तरीय पहाड़ी भाग Northern Hills Zone	सरगुजा कोरिया जशपुर बलरामपुर व सूरजपुर Surguja, Korea, Jashpurnagar, Balrampur and Surajpur	अम्बिकापुर Ambikapur
2.	छत्तीसगढ़ का मैदानी भाग Chhattisgarh Plain Zone	बिलासपुर, मुंगेली, रायगढ़, कोरबा, जांजगीर, राजनांदगाँव, दुर्ग बालोद बेमेतरा, रायपुर महासमुंद कबीरधाम, बलोदाबाजार, गरियाबंद, धमतरी कांकेर Bilaspur, Mungeli, Raigarh, Korba, Janjgir, Rajnandgaon, Durg, Balod, Bemetara, Raipur, Mahasamud, Kabirdham, Balodabazar, Gariyaband, Dhmatari, Kanker.	रायपुर Raipur
3.	छत्तीसगढ़ के बस्तर का पठारी भाग Bastar Plateau Zone	बस्तर, दंतेवाड़ा, नारायणपुर, बीजापुर, कोंडागाँव व सुकमा Bastar, Dantewada, Narayanpur, Bijapur, Kondagaon and Sukma	जगदलपुर Jagdalpur

➤ **DAMINI app** has been developed for monitoring and alert the lightning activity. **DAMINI App** can be downloaded from the google play store (Android users) and App Center (IOS users):

1. <https://play.google.com/store/apps/details?id=com.lightening.live.damini>

2. <https://apps.apple.com/app/id1502385645>

➤ Farmers are advised to register for meghdoot apps at

<http://play.google.com/store/apps/details?id=com.ass.meghdoot> and get crop and weather information through this.

Past Weather summary for the period: 05.10.2021 to 08.10.2021

Chief Amount of Rainfall (cm):

05.10.2021	Raipur (dist Raipur) 5, Sahaspurlohara (dist Kabirdham) 4, Pandharia (dist Kabirdham) 4, Mana-raipur-ap (dist Raipur) 4, Berla (dist Bemetara) 3, Bodla (dist Kabirdham) 3, Pakhanjur (dist Kanker) 3, Rajim (dist Gariaband) 3, Chhindgarh (dist Sukma) 3, Thankhamariya (dist Bemetara) 2, Bilaigarh (dist Baloda Bazar) 2, Basana (dist Mahasamund) 2, Kawardha (dist Kabirdham) 2, Darbha (dist Bastar) 1, Chhuria (dist Rajnandgaon) 1, Nawagarh (dist Bemetara) 1, Bastanar (dist Bastar) 1, Pallari/palari (dist Baloda Bazar) 1, Akaltara (dist Janjgir) 1, Bagbahara (dist Mahasamund) 1, Gharghoda (dist Raigarh) 1, Bhairamgarh (dist Bijapur) 1, Jaijaipur (dist Janjgir) 1, Saja (dist Bemetara) 1, Takhatpur (dist Bilaspur) 1
06.10.2021	Pakhanjur (dist Kanker) 6, Nagari (dist Dhamtari) 5, Chhuria (dist Rajnandgaon) 4, Makadi (dist Kondagaon) 4, Dongargarh (dist Rajnandgaon) 4, Jagdalpur (dist Bastar) 3, Rajnandgaon (dist Rajnandgaon) 3, Nerharpur (dist Kanker) 3, Antagarh (dist Kanker) 3, Pharasgaon (dist Kondagaon) 2, Bhanupratappur (dist Kanker) 2, Dongargaon (dist Rajnandgaon) 2, Kanker (dist Kanker) 2, Dondilohara (dist Balod) 2, Manpur (dist Rajnandgaon) 1, Bastanar (dist Bastar) 1
07.10.2021	Bastanar (dist Bastar) 3, Dondilohara (dist Balod) 2, Tokapal (dist Bastar) 2, Korba (dist Korba) 2, Arang (dist Raipur) 1, Kota (dist Bilaspur) 1, Lormi (dist Mungeli) 1
08.10.2021	Sahaspurlohara (dist Kabirdham) 3, Tokapal (dist Bastar) 3, Pendra Road (dist Bilaspur) 2, Gandai (dist Rajnandgaon) 1, Gidam (dist Dantewada) 1, Bhairamgarh (dist Bijapur) 1

S.NO	STATION	Rainfall(mm)			
		05.10.2021	06.10.2021	07.10.2021	08.10.2021
1	Raipur		0.0	0.0	Trace
2	Mana AP	0.0	Trace	0.0	Trace
3	Bilaspur	9.8	6.6	0.0	0.0
4	Pendra-road	1.0	13.4	11.3	0.0
5	Ambikapur	0.0	0.0	0.0	0.0
6	Jagdalpur	0.0	2.3	0.0	0.0
7	Durg	0.0	6.6	Trace	0.0
8	Rajnandgaon	0.0	38.4	0.0	0.0

❖ **Temperature**

S.No	Station	05.10.2021		06.10.2021		07.10.2021		08.10.2021	
		Max(°C)	Min (°C)	Max(°C)	Min (°C)	Max(°C)	Min (°C)	Max(°C)	Min (°C)
1	Raipur	32.4	25.8	33.4	23.7	33.0	25.2	32.4	25.8
2	Mana AP	32.5	25.6	32.2	23.9	32.6	25.4	32.5	25.6
3	Bilaspur	34.0	24.4	33.2	25.4	33.6	25.4	34.0	24.4
4	Pendra-road	33.4	21.2	33.1	21.0	32.6	20.7	33.4	21.2
5	Ambikapur	31.0	22.0	31.0	23.0	30.8	21.7	31.0	22.0
6	Jagdalpur	32.4	23.0	31.6	22.9	32.5	23.5	32.4	23.0
7	Durg	33.9	23.2	32.2	22.8	32.6	22.2	33.9	23.2
8	Rajnandgaon	34.5	27.0	32.0	26.0	33.5	25.0	34.5	27.0

❖ **Temperature Range**

	Temperature (°C)	Departure (°C)
Maximum temperature	31 to 35	00 to +03
Minimum temperature	21 to 27	00 to +03

Relative humidity(for above 08 stations) : RH was in the range of 54% to 98%.

Cloud amount(for above 08 stations): 04-07 octa.

Wind Speed (for above 08 stations): Ranged between 04-10 kmph in the state during the week.

Agroclimatic Zone wise Weather forecast for Chhattisgarh

छत्तीसगढ़ का उत्तरीय पहाड़ी भाग

Weather forecast for Northern Hills Zone

	SURGUJA					BALRAMPUR				
	09-Oct	10-Oct	11-Oct	12-Oct	13-Oct	09-Oct	10-Oct	11-Oct	12-Oct	13-Oct
Rainfall (mm)	8	5	0	0	0	5	0	0	0	0
Max. Temp. (°C)	31	31	31	31	31	31	31	31	31	31
Min. Temp. (°C)	22	23	21	21	21	22	23	21	21	21
Cloud Cover (Octa)	4	4	2	2	3	1	1	3	2	3
Maximumhumidity(%)	95	95	90	90	90	95	95	90	90	90
Minimum humidity(%)	65	60	60	60	60	65	60	60	60	60
Wind Speed (kmph)	2	4	3	2	2	3	4	3	3	2
Wind Direction	W	NW	W	W	SE	NW	NW	NW	W	E
Warning	NO WARNIN G	NO WARNIN G	NO WARNIN G	NO WARNIN G	NO WARNIN G	NO WARNIN G	NO WARNIN G	NO WARNIN G	NO WARNIN G	NO WARNIN G
	SURAJPUR					JASHPUR				
	09-Oct	10-Oct	11-Oct	12-Oct	13-Oct	09-Oct	10-Oct	11-Oct	12-Oct	13-Oct
Rainfall (mm)	5	0	0	0	0	0	8	0	0	0
Max. Temp. (°C)	31	31	31	31	31	31	31	31	31	31
Min. Temp. (°C)	22	23	21	21	21	22	23	21	21	21
Cloud Cover (Octa)	2	2	4	1	1	4	4	3	2	2
Maximumhumidity(%)	95	95	90	90	90	95	95	90	90	90
Minimum humidity(%)	65	60	60	60	60	65	60	60	60	60
Wind Speed (kmph)	3	4	3	3	3	2	3	3	3	3
Wind Direction	SE	SW	SW	SW	E	SE	SE	SE	SE	E
Warning	NO WARNIN G	NO WARNIN G	NO WARNIN G	NO WARNIN G	NO WARNIN G	NO WARNIN G	NO WARNIN G	NO WARNIN G	NO WARNIN G	NO WARNIN G
	KOREA									
	09-Oct	10-Oct	11-Oct	12-Oct	13-Oct					
Rainfall (mm)	7	7	5	0	0					
Max. Temp. (°C)	31	31	31	31	31					
Min. Temp. (°C)	22	23	21	21	21					
Cloud Cover (Octa)	5	5	5	4	4					
Maximumhumidity(%)	95	95	90	90	90					
Minimum humidity(%)	65	60	60	60	60					
Wind Speed (kmph)	2	3	3	3	2					
Wind Direction	NE	NE	E	NE	E					
Warning	NO WARNIN G	NO WARNIN G	NO WARNIN G	NO WARNIN G	NO WARNIN G					

कृषि जलवायु क्षेत्रानुसार- कृषि/कृषि मौसम परामर्श
Agro climatic Zone wise Agro- meteorological Advisories

छत्तीसगढ़ का उत्तरीय पहाड़ी भाग
Northern Hills Zone

(सरगुजा कोरिया जशपुर बलरामपुर व सूरजपुर)

किसानों के लिये समसामयिक सुझाव

क्रं	फसल का नाम	फसल की अवस्था	कृषि क्रियाएँ	मौसम आधारित सलाह
1.	धान	पुष्पन अवस्था	शीघ्र पकने वाली धान की फसल पुष्पन अवस्था में है, यदि उनमें 50 % पुष्पन हो चुका है तो नत्रजन की तृतीय किशत का छिड़काव करें। पोटैश की सिफारिश मात्रा का 25 प्रतिशत भाग फूल निकलने की अवस्था पर टॉप ड्रेसिंग करने से धान के दानों की संख्या एवं वजन में वृद्धि देखी गई है।	<ul style="list-style-type: none"> ➤ मौसम साफ रहने एवं वर्षा न होने पर ही उर्वरकों का छिड़काव करें। ➤ धान की कुल जल आवश्यकता का 50 प्रतिशत गर्भवस्था से दूध भरने तक लगता है। अतः फूल आने एवं दाने में दूध भरने की अवस्था में पानी की कमी से उपज में सर्वाधिक नुकसान होता है। अतः किसान भाइयों को सलाह है कि खेत में 5से.मी. पानी भरकर रखें। ➤ अधिक पानी जमाव की स्थिति में जलनिकास-की व्यवस्था करें
		कीट व्याधि (तना छेदक)	धान फसल पर पीला तना छेदक कीट के वयस्क दिखाई देने पर फसल का निरीक्षण कर तना छेदक के अंडा समूह को एकत्र कर नष्ट कर दें। साथ ही डेड हार्ट (सूखी पत्ती) को खींचकर निकाल दें। तना छेदक की तितली। मोथ प्रति वर्ग मीटर में होने पर फिपरोनिल 5 एस.सी.। लीटर प्रति दर से छिड़काव करें।	<ul style="list-style-type: none"> ➤ गातार वर्षा होने के कारण कीट व्याधि प्रकोप की संभावना बढ़ जाती है। अतः किसान भाइयों को सलाह है कि खेतों की सतत निगरानी करें व लक्षण दिखने पर उपयुक्त रोकथाम के उपाय करें। ➤ सान भाइयों अपनी खेत की सतत निगरानी करें। ➤ सम साफ रहने एवं वर्षा न होने पर ही कीटनाशक दवाई का छिड़काव करें।
		माहूँ कीट	कहीं कहीं पर माहूँ कीट का प्रकोप शुरू हो गया है, धान फसल की सतत निगरानी करें एवं कीटों की संख्या 10-15 प्रति पौधा हो जाने पर शुरुवात में ब्युपरोफेजिन 800 मि.ली. प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। 15 दिन बाद अगर कीट का प्रकोप बढ़ता दिखाई दे तो डाइनेटोफ्युरान 200 ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से 500 लीटर पानी में घोल बनाकर अपराह्न काल में फसल के आधोरीय भागों पर छिड़काव करें। सिंथेटिक पाईराथ्राईड वर्ग के कीटनाशक जैसे साइपरमैथिरिन व डेल्टामैथिरिन दवाओं का उपयोग माहूँ के प्रकोप को बढ़ा सकता है अतः इनका उपयोग माहूँ नियंत्रण में ना करें।	<ul style="list-style-type: none"> ➤ गातार वर्षा होने के कारण कीट व्याधि प्रकोप की संभावना बढ़ जाती है। अतः किसान भाइयों को सलाह है कि खेतों की सतत निगरानी करें व लक्षण दिखने पर उपयुक्त रोकथाम के उपाय करें। ➤ सान भाइयों अपनी खेत की सतत निगरानी करें। ➤ सम साफ रहने एवं वर्षा न होने पर ही कीटनाशक दवाई का छिड़काव करें।
		पेनिकल माईट	कहीं कहीं पर धान में पेनिकल माईट का प्रकोप देखने में आया है जिसकी पहचान पौधे व बदरंग दाने व तने पर भूरापन देखकर किया जा सकता है। इसके निदान हेतु प्रोपिकोनाजोल 2 मि.ली.+ प्रोफेनोफास 2 मि.ली.प्रति लीटर पानी में घोलकर 500 लीटर घोल प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।	<ul style="list-style-type: none"> ➤ गातार वर्षा होने के कारण कीट व्याधि प्रकोप की संभावना बढ़ जाती है। अतः किसान भाइयों को सलाह है कि खेतों की सतत निगरानी करें व लक्षण दिखने पर उपयुक्त रोकथाम के उपाय करें। ➤ सान भाइयों अपनी खेत की सतत निगरानी करें। ➤ सम साफ रहने एवं वर्षा न होने पर ही कीटनाशक दवाई का छिड़काव करें।
		झुलसा रोग (ब्लास्ट)	धान की फसल में रोग के प्रारंभिक अवस्था में निचली पत्ती पर हल्के बैंगनी रंग के धब्बे पड़ते हैं, जो धीरे धीरे बढ़कर आँख /नाँव के सामान बीच में चौड़े एवं किनारों में सकरे हो जाते हैं इन धब्बों के बीच का रंग हल्के भूरे रंग का होता है। इसके	<ul style="list-style-type: none"> ➤ गातार वर्षा होने के कारण रोग के प्रकोप की संभावना बढ़ जाती है। अतः किसान भाइयों को सलाह है कि खेतों की सतत निगरानी करें व लक्षण दिखने पर उपयुक्त रोकथाम के उपाय करें। ➤ सान भाइयों अपनी खेत की सतत निगरानी करें।

			नियंत्रण के लिये टेबूकोनाजोल 750 मि.ली. प्रति हे. 500 लीटर पानी घोल बना कर छिड़काव करें।	। ➤ सम साफ रहने एवं वर्षा न होने पर ही रोगनाशक दवाई का छिड़काव करें।
		जीवाणु जनित झुलसा-(बहरीपान) रोग	पत्ती का किनारे वाला ऊपरी भाग हल्का पीला सा हो जाता है तथा पूरी पत्ती मटमैले पीले रंग की होकर पत्रक (शीथ) तक सूख जाती है। रोग के लक्षण दिखने पर यदि पानी उपलब्ध हो, तो खेत से पानी निकालकर 3-4 दिन तक खुला रखें तथा 25 किलो पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से भुरकाव करें। स्ट्रेप्टोमाइसिन सल्फेट + टेट्रासाइक्लिन संयोजन 300 ग्राम + कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 1.25 किग्रा / हे. 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। यदि आवश्यक हो तो 15 दिन बाद दोहराएं।	
		शीथ ब्लाइट रोग	धान के खेत में पानी की सतह के ऊपर पौधों के तनों पर यदि मटमैले रंग के बड़े बड़े धब्बे दिख रहे हों तथा यह धब्बे बैंगनी रंग के किनारे से घिरे हो, जिसे शीथ ब्लाइट रोग कहते हैं। यह रोग आने पर हेक्साकोनाजोल फंफूदनाशक दवा (1 मि.ली./ली.पानी) का छिड़काव रोगग्रस्त भागों पर करें। आवश्यकता पड़ने पर यह छिड़काव 12-15 दिन बाद पुनः दोहराया जा सकता है।	➤ गातार वर्षा होने के कारण रोग के प्रकोप की संभावना बढ़ जाती है। अतः किसान भाइयों को सलाह है कि खेतों की सतत निगरानी करें व लक्षण दिखने पर उपर्युक्त रोकथाम के उपाय करें। ➤ सान भाइयों अपनी खेत की सतत निगरानी करें। ➤ सम साफ रहने एवं वर्षा न होने पर ही रोगनाशक दवाई का छिड़काव करें।
2	दलहन फसल	पुष्प फलन अवस्था	उड़द - मूंग फसल में फली पक जाने पर प्रथम तोड़ई का कार्य करें।	➤ फसल में हानिकारक कीटों की उपस्थिति पर सतत निगरानी रखें। ➤ किसान भाइयों को सलाह है कि लगातार वर्षा हो रही है उसको ध्यान में रखते हुए जल निकास की उचित व्यवस्था करें। ➤ मौसम साफ रहने पर उड़द मूंग का प्रथम तोड़ई का कार्य अतिशीघ्र करें।
3	मक्का	नरमंजरी अवस्था	मक्का फसल में नरपुष्प निकलने की (नरमंजरी) अवस्था होने पर नत्रजन की तीसरी मात्रा का छिड़काव करें।	➤ मौसम साफ रहने एवं वर्षा न होने पर ही उर्वरकों का छिड़काव करें।

फल/फूल/सब्जी

- शिमला मिर्च, मिर्च, बैंगन, टमाटर की नर्सरी तैयार करें।
- गोभीवर्गीय सब्जियों जैसे फूलगोभी, पत्तागोभी व गाठगोभी की अगेती किस्म का थरहा तैयार करें।
- आम में रोग ग्रस्त शाखाओं की हल्की छटाई का कार्य करें।
- केले के जिन पौधों में फूल/फल आया हो तुरंत बांस लगाकर सहारा प्रदान करें।
- किसान भाई केला के फसल में मिट्टी चढ़ने का कार्य करें।
- आंवला में इन्डरबेला का आक्रमण सितम्बर-अक्टूबर में होता है अतः इसके नियंत्रण हेतु छोटा मटका में गुड का घोल एवं कोई भी कीटनाशक दवा 1 ग्राम डालकर पेड़ की टहनियों में लटका दें।
- सेवंती, ग्लेडियोलस के पौध लगाने का उपयुक्त समय है एवं रजनीगंधा की फसल में खरपतवार नियंत्रण करना आवश्यक है।

पशुपालन

- पशुबाड़े के आसपास की झाड़ियों को काटकर सफाई कर लें ताकि मक्खियों एवं मच्छरों का प्रकोप न हो।
- पशुबाड़े में शाम के समय ताजी नीम की पत्तियों को आग में डालकर धुआं करें।
- किलनी एवं मक्खियों से बचाव हेतु पशुबाड़े में साईपरमेथरीन (cypermethrin) अथवा अमितराज (Amitraj) नामक दवा का 1 मि.ली. घोल 1 लीटर पानी में घोलकर स्प्रे करें।
- किसान भाईयो को सलाह दी जाती है की सितम्बर माह में बकरियों एवं भेड़ों को एंटोरोटोक्सीमिया नामक बीमारी का टीका अवश्य लगवा लें। बढ़ते मेमनों को 6-10 सप्ताह की उम्र में इस बीमारी का टीका लगवाये।
- पशुबाड़े, मुर्गीघर एवं तालाब पोखरों के आसपास उगे खरपतवार घास की सफाई करते रहे ताकि मक्खी, मच्छर पनपने न पायें पशुशाला में गोबर के कंडे का धुआं करते रहे।
- दुधारू गायो को यदि चराने ले जाते हैं तो उनके अयन एवं थन पर हिमैक्स मलहम लगायें ताकि मक्खियाँ न बैठे
- सीलन से बचाव हेतु बिछावन पर 2-3 किलो प्रति 100 वर्गफुट कि दर से बुझा चूना मिला दें।

छत्तीसगढ़ का मैदानी भाग

Chhattisgarh Plain Zone

(बिलासपुर, मुंगेली, रायगढ़, कोरबा, जांजगीर, राजनांदगाँव, दुर्ग बालोद, बेमेतरा, रायपुर, महासमुंद, कबीरधाम बलोदाबाज़ार, गरियाबंद, धमतरी कांकेर)

क्रं	फसल का नाम	फसल की अवस्था	कृषि क्रियाए	मौसम आधारित सलाह
1.	धान	पुष्पन अवस्था	धान की फसल पुष्पन अवस्था में है, यदि उनमें 50 % पुष्पन हो चुका है तो नत्रजन की तृतीय किशत का छिड़काव करें। पोटाश की सिफारिश मात्रा का 25 प्रतिशत भाग फूल निकलने की अवस्था पर टॉप ड्रेसिंग करने से धान के दानों की संख्या एवं वजन में वृद्धि देखी गई है।	धान की कुल जल आवश्यकता का 50 प्रतिशत गर्भवस्था से दूध भरने तक लगता है। अतः फूल आने एव दाने में दूध भरने की अवस्था में पानी की कमी से उपज में सर्वाधिक नुकसान होता है। अतः किसान भाइयों को सलाह है कि खेत में 5 से.मी. पानी भरकर रखें।
		कीट व्याधि (तना छेदक)	धान फसल पर पीला तना छेदक कीट के वयस्क दिखाई देने पर फसल का निरीक्षण कर तना छेदक के अंडा समूह को एकत्र कर नष्ट कर दें। साथ ही सूखी सफेद बाली को खीचकर निकाल दें। तना छेदक की तितली 1 मोथ प्रति वर्ग मीटर में होने पर फिपरोनिल 5 एस.सी. 1 लीटर प्रति दर से छिड़काव करें।	
		माहू कीट	माहू कीट का प्रकोप शुरू हो गया है। धान फसल की सतत निगरानी करें एवं कीटों की संख्या 10-15 प्रति पौधा हो जाने पर शुरुवात में ब्युपरोफेजिन 800 मि.ली. प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। 15 दिन बाद अगर कीट का प्रकोप बढ़ता दिखाई दे तो डाइनेटोफ्युरान 200 ग्रा. या ट्राईफ्लोमिजोपाइरम 500 मि.मी. प्रति हेक्टेयर की दर से 500 लीटर पानी में घोल बनाकर अपरान्ह काल में फसल के आधोरीय भागों पर छिड़काव करें। सिंथेटिक पाईराथाइड वर्ग के कीटनाशक जैसे साइपरमैथिरिन व डेल्टामैथिरिन दवाओं का उपयोग माहू के प्रकोप को बढ़ा सकता है अतः इनका उपयोग माहू नियंत्रण में ना करें।	मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आने वाले दिनों में कुछ स्थानों में दिनांक 09 अक्टूबर, 2021 को हल्की वर्षा होने की संभावना को ध्यान में रखते हुए किसान भाइयों को सलाह है कि मौसम साफ रहने पर कीटनाशक दवाई का छिड़काव करें।
		पेनिकल माईट	धान फसल में पेनिकल माईट का प्रकोप देखने में आया है जिसकी पहचान पांचे व बदरंग दाने व तने पर भूरापन देखकर किया जा सकता है। इसके निदान हेतु एबेमेक्टिन 0.5 मि.मी. प्रति लीटर पानी के हिसाब से	किसान भाइयों अपनी खेत की सतत निगरानी करें। मौसम साफ रहने एवं वर्षा न होने पर कीटनाशक दवाई का छिड़काव

			छिड़काव करें।	करें।
	झुलसा रोग (नेक ब्लास्ट)	धान की फसल में रोग के लक्षण पत्तियों, बाली की गर्दन एवं तने की निचली गठानों पर प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं। रोग के प्रकोप से धान की बाली पर सड़न पैदा हो जाती है तथा उपज प्रभावित होती है, क्योंकि बाली टूटकर गिर जाती है। इसके नियंत्रण के लिये ट्रायसाइक्लाजोल 75% WP 300 ग्राम या टेबूकोनाजोल 750 मि.ली. प्रति हे. 500 लीटर पानी घोल में बना कर छिड़काव करें।		मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आने वाले दिनों में कुछ स्थानों में दिनांक 09 अक्टूबर, 2021 को हल्की वर्षा होने की संभावना को ध्यान में रखते हुए किसान भाइयों को सलाह है कि मौसम साफ रहने पर कीटनाशक एवं फफूंदनाशक दवाई का छिड़काव करें।
	शीथराट	धान के बाली में शीथ पर भूरा या कालापन (शीथराट) देखने पर प्रोपिकोनाजोल 1.5 मि.ली.प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।		
	शीथ ब्लाइट रोग	धान के खेत में पानी की सतह के ऊपर पौधों के तनों पर यदि मटमैले रंग के बड़े बड़े धब्बे दिख रहे हों तथा यह धब्बे बैंगनी रंग के किनारे से घिरे हो, जिसे शीथ ब्लाइट रोग कहते हैं। यह रोग आने पर हेक्साकोनाजोल फफूंदनाशक दवा (1 मि.ली./ली.पानी) का छिड़काव रोगग्रस्त भागों पर करें। आवश्यकता पड़ने पर यह छिड़काव 12-15 दिन बाद पुनः दोहराया जा सकता है।		मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आने वाले दिनों में कुछ स्थानों में दिनांक 09 अक्टूबर, 2021 को हल्की वर्षा होने की संभावना को ध्यान में रखते हुए किसान भाइयों को सलाह है कि मौसम साफ रहने पर कीटनाशक एवं फफूंदनाशक दवाई का छिड़काव करें।
2	दलहन एवं तिलहन फसल	फली पकने की अवस्था	उड़द, मूंग एवं सोयाबीन की फसलों में फली पक जाने पर कटाई का कार्य करें।	मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आने वाले दिनों में कुछ स्थानों में दिनांक 09 अक्टूबर, 2021को हल्की वर्षा होने की संभावना को ध्यान में रखते हुए फसल कटाई का कार्य करें।
3	उतेरा फसल	-	वर्तमान समय उतेरा फसल लेने हेतु उपयुक्त है, जो किसान भाई उतेरा फसल लेना चाहते हैं वे तिवरा या अलसी का उतेरा करें।	जिन खेतों में धान फसल परिपक्वता की ओर है तथा खेत में नमी है वहां उतेरा डाल सकते हैं।
4	रबी फसलों की तैयारी	-	रबी फसलों के लिए खेत की तैयारी अक्टूबर माह में करें। इस हेतु ट्रेक्टर चालित रोटावेटर अथवा कल्टीवेटर का प्रयोग कर खाली खेतों में उथली जुताई करें। इस हेतु कुल्थी, मूंग, उड़द, तोरिया, सूरजमुखी एवं चारे वाली फसलों की बुवाई किसान भाई करें।	जहां धान फसल या अन्य खरीफ फसल पक चुकी है वहां रबी फसलें की तैयारी करें।

सब्जियों/फल/ फूल

1. शीतकालीन गोभीवर्गीय सब्जियाँ जैसे फूलगोभी, पत्तागोभी व गाठगोभी की अगेती किस्म का चयन कर नर्सरी डालें।
2. टमाटर, भटा, मिर्च एवं शिमला मिर्च की रोपणी लगाने की तैयारी करें।
3. कृषक बन्धु केला के फसल में मिटटी चढ़ने का कार्य करें।
4. आंवला में इन्डरबेला कीट का आक्रमण सितम्बर-अक्टूबर में होता है अतः इसके नियंत्रण हेतु छोटे मटके में गुड़ का घोल एवं कोई भी कीटनाशक दवा 1 ग्राम डालकर पेड़ की टहनियों में लटका दे।
5. गेंदा में फूल आने का समय है अतः बाजार भेजना सुनिश्चित करें। सेवंती, ग्लेडियोलस फूलों के पौधे लगाने का यह उपयुक्त समय है एवं रजनीगंधा की फसल में खरपतवार नियंत्रण करना आवश्यक है।

पशुपालन

1. पशुशाला एवं मुर्गीघर में हवा के आगमन की व्यवस्था करें।
2. अपने मवेशियों को खुरहा चपका बीमारी का टीका लगवाये।
3. पशुशाला के फर्श को फिनाइल के घोल से धोये एवं फर्श को सूखा रखे।
4. पशुबाड़े, मुर्गीघर एवं तालाब पोखरों के आसपास उगे खरपतवार की सफाई करते रहे ताकि मक्खी, मच्छर पनपने न पायें पशुशाला में गोबर के कंडे का धुआं करते रहे।

छत्तीसगढ़ के बस्तर पठारी भाग

Bastar Plateau Zone

(बस्तर, दंतेवाड़ा, नारायणपुर, कोण्डागाँव, बीजापुर, सुकमा)

किसान भाइयों से अनुरोध है कि वे मेघदूत एप पर (<https://play-google-com/store/apps/details?id=com.aas.meghdoot>) रजिस्टर करें एवं मौसम एवं खेती संबंधी जानकारी प्राप्त करें।

बीजापचार	<ul style="list-style-type: none"> ❖ दैहिक दवायें— इन दवाओं से उपचारित करने से बीज के भीतर मौजूद फफूंद नष्ट हो जाती है साथ ही यह बीजांकुर को भी 15–20 दिनों तक रोगों से सुरक्षा प्रदान करती है। इनमें मुख्यतः वीटावैक्स का उपयोग 2 से 2.5 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीजदर से उपयोग में लाना चाहिए। ❖ अदैहिक दवायें – इन दवाओं से उपचारित करने पर सभी फसलों के बीज सतह पर मौजूद फफूंद नष्ट हो जाती है। इनमें प्रमुख थीरम, केप्टान, डायथेन एम-45। किसानों को सलाह दी जाती है की इन दवाओं को 3 ग्राम प्रति किलो के बीज दर से उपयोग करें। ❖ किसानों को सलाह दी जाती है कि रबी के दलहनी फसल जैसे काबुली चना, मसूर, मटर को बोवाई से पहले रइजोबियम कल्चर से उपचार करें।
कीट एवं रोग प्रबंधन	<ul style="list-style-type: none"> ❖ कुछ किसानों के खेतों में धान में झुलसा रोग के प्रकोप देखे जा रहे हैं अतः इसके संक्रमण को नियंत्रित करने हेतु 30 दिनों से कम उम्र की फसलों में सुडोमोनास @ 10 ग्राम प्रति लीटर पानी या टेबुकोनाजोल 50 प्रतिशत + ट्राइफ्लोक्सीस्ट्रोबिन 25 डब्ल्यू जी @ 0.40 ग्राम प्रति लीटर पानी के दर से छिड़काव करें एवं 30 दिनों से अधिक पुरानी संक्रमित फसलों के लिए किसानों को हाथों से निंदाई – गुड़ाई करने की सलाह दी जाती है। ❖ उर्द एवं मूंग की फसलों में सफेद मक्खी के प्रकोप देखे जा रहे हैं, अतः इनके नियंत्रण हेतु किसान भाइयों को कीटनाशक, डाइमथोएट @ 0.03% या मेटासिस्टॉक्स @ 0.1% या ट्राईजोफॉस @ 1.25 मिली प्रति लीटर पानी का छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।
खरीफ फसले	<ul style="list-style-type: none"> ❖ धान की खड़ी फसलों में बाली के घुन कीटों के प्रकोप देखे जा रहे हैं, अतः इनके रोकथाम हेतु किसान भाइयों को सलाह दी जाती है की इथीयान 500 मि. ली. प्रति हैक्टर के दर से
बीजापचार	<ul style="list-style-type: none"> ❖ दैहिक दवायें— इन दवाओं से उपचारित करने से बीज के भीतर मौजूद फफूंद नष्ट हो जाती है साथ ही यह बीजांकुर को भी 15–20 दिनों तक रोगों से सुरक्षा प्रदान करती है। इनमें मुख्यतः वीटावैक्स का उपयोग 2 से 2.5 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीजदर से उपयोग में लाना चाहिए। ❖ अदैहिक दवायें – इन दवाओं से उपचारित करने पर सभी फसलों के बीज सतह पर मौजूद फफूंद नष्ट हो जाती है। इनमें प्रमुख थीरम, केप्टान, डायथेन एम-45। किसानों को सलाह दी जाती है की इन दवाओं को 3 ग्राम प्रति किलो के बीज दर से उपयोग करें। ❖ किसानों को सलाह दी जाती है कि रबी के दलहनी फसल जैसे काबुली चना, मसूर, मटर को बोवाई से पहले रइजोबियम कल्चर से उपचार करें।
कीट एवं रोग प्रबंधन	<ul style="list-style-type: none"> ❖ कुछ किसानों के खेतों में धान में झुलसा रोग के प्रकोप देखे जा रहे हैं अतः इसके संक्रमण को नियंत्रित करने हेतु 30 दिनों से कम उम्र की फसलों में सुडोमोनास @ 10 ग्राम प्रति लीटर पानी या टेबुकोनाजोल 50 प्रतिशत + ट्राइफ्लोक्सीस्ट्रोबिन 25 डब्ल्यू जी @ 0.40 ग्राम प्रति लीटर पानी के दर से छिड़काव करें एवं 30 दिनों से अधिक पुरानी संक्रमित फसलों के लिए किसानों को हाथों से निंदाई – गुड़ाई करने की सलाह दी जाती है। ❖ उर्द एवं मूंग की फसलों में सफेद मक्खी के प्रकोप देखे जा रहे हैं, अतः इनके नियंत्रण हेतु किसान भाइयों को कीटनाशक, डाइमथोएट @ 0.03% या मेटासिस्टॉक्स @ 0.1% या ट्राईजोफॉस @ 1.25 मिली प्रति लीटर पानी का छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।
खरीफ फसले	<ul style="list-style-type: none"> ❖ धान की खड़ी फसलों में बाली के घुन कीटों के प्रकोप देखे जा रहे हैं, अतः इनके रोकथाम हेतु किसान भाइयों को सलाह दी जाती है की इथीयान 500 मि. ली. प्रति हैक्टर के दर से
बीजापचार	<ul style="list-style-type: none"> ❖ दैहिक दवायें— इन दवाओं से उपचारित करने से बीज के भीतर मौजूद फफूंद नष्ट हो जाती है साथ ही यह बीजांकुर को भी 15–20 दिनों तक रोगों से सुरक्षा प्रदान करती है। इनमें मुख्यतः वीटावैक्स का उपयोग 2 से 2.5 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीजदर से उपयोग में लाना चाहिए। ❖ अदैहिक दवायें – इन दवाओं से उपचारित करने पर सभी फसलों के बीज सतह पर मौजूद फफूंद नष्ट हो जाती है। इनमें प्रमुख थीरम, केप्टान, डायथेन एम-45। किसानों को सलाह दी जाती

	<p>है की इन दवाओं को 3 ग्राम प्रति किलो के बीज दर से उपयोग करें।</p> <ul style="list-style-type: none"> ❖ किसानों को सलाह दी जाती है कि रबी के दलहनी फसल जैसे काबुली चना, मसूर, मटर को बुवाई से पहले रइजोबियम कल्चर से उपचार करें।
कीट एवं रोग प्रबंधन	<ul style="list-style-type: none"> ❖ कुछ किसानों के खेतों में धान में झुलसा रोकथाम के प्रकोप देखे जा रहे हैं, अतः इनको रोकथाम के लिए सुडोमोनास/ली. पानी या फिर 0.40 ग्राम प्रति लीटर पानी के दर से टबुकोनाजोल 50 प्रतिशत, ट्राइफ्लोक्सिस्ट्रोबिन 25 डब्ल्यू. जी. का छिड़काव करें। ❖ उर्द एवं मूंग की फसलों में सफेद मक्खी के प्रकोप देखे जा रहे हैं, अतः इनके नियंत्रण हेतु किसान भाइयों को कीटनाशक, डाइमिथोएट @ 0.03% या मेटासिस्टॉक्स @ 0.1% या ट्राइजोफॉस @ 1.25 मिली प्रति लीटर पानी का छिड़काव करने की सलाह दी जाती है। ❖ उर्द एवं मूंग की फसलों में सफेद मक्खी के प्रकोप देखे जा रहे हैं, अतः इनके नियंत्रण हेतु किसान भाइयों को कीटनाशक, डाइमिथोएट @ 0.03% या मेटासिस्टॉक्स @ 0.1% या ट्राइजोफॉस @ 1.25 मिली प्रति लीटर पानी का छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।
खरीफ फसले	<ul style="list-style-type: none"> ❖ धान की खड़ी फसलों में बाली के घुन कीटों के प्रकोप देखे जा रहे हैं, अतः इनके रोकथाम हेतु किसान भाइयों को सलाह दी जाती है की इथीयान 500 मि. ली. प्रति हैक्टर के दर से सुबह या शाम के समय छिड़काव करें। ❖ किसानों को सलाह दी जाती है की धान की फसल को शारीरिक परिपक्वता अवस्था में कटाई कर लें जिससे रबी फसलों के लिए 10 – 15 दिन बच जाएगा। इसके अतिरिक्त, शेष बची हुई मिटटी के नमी का उपयोग शून्य जोत विधि द्वारा रबी फसलों के बुवाई के लिए किया जा सकेगा। ❖ किसानों को सलाह दी जाती है की मक्के के फसल की बाहरी सतह हरे से सफेद हो जाने पर मक्का की कटाई की जानी चाहिए। ❖ किसानों को सलाह दी जाती है की बड़ी अवधि वाली धान की किस्मों में खरपतवार मुक्त कर अंतिम खुराक के रूप में बची हुई यूरिया की मात्रा का छिड़काव करें। ❖ धान की छोटी अवधि की किस्में खेतों में परिपक्व होती हुई दिख रही हैं। अतः किसानों को सलाह दी जाती है कि छोटी अवधि धान की फसल की कटाई खेत से पानी निकलने के बाद करें। ❖ लगातार वर्षा तथा उच्च सापेक्ष आर्द्रता के कारण खड़ी फसलों में कीट और बीमारियों का प्रकोप बढ़ जाता है। अतः किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि वे किसी भी प्रकार के संक्रमण हेतु अपने खेत में निरंतर निगरानी रखें। ❖ किसान भाइयों को सलाह दी जाती है की जल्दी पकने वाले धान की कटाई कर तोरिया की बुवाई करें।
लघु धान्य फसलें	<ul style="list-style-type: none"> ❖ किसान भाइयों को सलाह दी जाती है की जल्दी पकने वाली कुटकी फसल परिपक्व हो रही है, अतः आने वाले दिनों में साफ मौसम देखते हुए इनकी कटाई करें एवं कटाई के पश्चात साफ एवं सूखे जगहों पर संरक्षित करें। ❖ रागी के फसलों में सफेद मक्खी के प्रकोप देखे जा रहे हैं, अतः किसान भाइयों को सलाह दी जाती है की इनसे बचाव हेतु इमिडाक्लोप्रिड @ 1.5 मि. ली. प्रति लीटर पानी के साथ छिड़काव करें। ❖ रागी में झुलसा रोग के रोकथाम के लिए 10 ग्राम सुडोमोनास/ली. पानी या फिर 0.40 ग्राम / ली. पानी की दर से टबुकोनाजोल 50 प्रतिशत, ट्राइफ्लोक्सिस्ट्रोबिन 25 डब्ल्यू. जी. का छिड़काव करें। ब्लास्ट संभावित क्षेत्रों में नाइट्रोजन उर्वरकों के उपयोग में कमी की जानी चाहिए क्योंकि नाइट्रोजन उर्वरक का ब्लास्ट रोग की घटनाओं के साथ सकारात्मक संबंध है।
फल, कन्द, कद्दूवर्गीय एवं सब्जि वाली फसलें	<ul style="list-style-type: none"> ❖ किसानों को सलाह दी जाती है कि केले के पौधे जो फलने या फूलने की अवस्था में हों उनको बांस की मदद से सहायता प्रदान करें। ❖ किसानों को सलाह दी जाती है कि फूलगोभी, बंदगोभी, गांठ गोभी तथा मूली जैसे सब्जियों की खेत की तयारी तथा बुवाई के लिए मौसम की स्थिति एवं खेतों में नमी इष्टतम है। बुवाई से पूर्व गोभर की खाद एवं कम्पोट को नर्सरी में उपयोग में लाएं। इसके पश्चात 35 – 40 दिन पुराने पौधों को नर्सरी से नकल खेतों में लगाएं।

**मुर्गीपालन/
पशुपालन**

- ❖ किसानों को सलाह दिया जाता है की पशुओं के गर्भावस्था के अंतिम 3 महीनों के दौरान गर्भवती पशुओं को 10–15 किलोग्राम हरा चारा, 30–50 ग्राम खनिज मिश्रण और 30 ग्राम साधारण नमक खिलाया जाना चाहिए।
- ❖ पशुओं से अधिक उत्पादन लेने हेतु किसान भाइयों को सलाह दी जाती है की पशुओं को 25 – 30 की. ग्रा. हरा चारा, 3:1 (हरा चारा : सूखा चारा) के अनुपात में प्रतिदिन दें।
- ❖ किसानों को सलाह दी जाती है कि वे प्रभावित पशुओं को आश्रय और चारा प्रदान करें। इसके पश्चात स्थिति के अनुसार दवाएं, कृमिनाशक तथा टीकाकरण करें।
- ❖ पशुओं को ताजा और अपरिपक्व पत्तियों को अधिक मात्रा में नहीं खिलाया जाना चाहिए क्योंकि वे दस्त का कारण हो सकते हैं।